पाठ - 17
रसूल ﷺ का सब्र

الدرس السابع عشر - هندي
صبره ﷺ

जहां तक रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब्र की बात है तो आपकी पूरी ज़िन्दगी सब्र व धैर्य और जिहाद व मुजाहिदों से इबारत है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुरआन की पहली आयत के नाज़िल होने के बाद से लेकर ज़िन्दगी के आखिरी पल तक सब्र व धैर्य का मुज़ाहिरा करते रहे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहली वही के समय फ़रिश्ते से मुलाक़ात के अवसर पर ही मालूम हो गया कि इस राह में उन्हें किन मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। उस समय आपको खदीजा रजियल्लाहु अन्हावरक़ा बिन नोफ़िल के पास लेकर गयीं। वरक़ा ने कहाः ''काश मैं उस समय ज़िन्दा होता जबकि आप की क़ौम के लोग आपको मक्का से निकाल देंगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुछाः ''क्या वे लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहाः हां, क्यों कि आप जिस चीज़ को लेकर आए हैं उसे लेकर जो कोई इन्सान आया है उसे तकलीफ़ दी गयी है। अतएव पहली फ़ुरसत में ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आपको परिशानियों, कष्टों व यातनाओं और दुश्मनी के लिए तैयार कर लिया।

जिन घटनाओं से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब्र व इस्तक़ामत का पता चलता है उनमें से यह भी है कि आप मक्का में अपने पालनहार का सन्देश पहुंचा रहे थे और इस दौरान अपनी क़ौम, घर परिवार वालों की तरफ़ से दी जाने वाली शारीरिक यातनाओं को सहन किया इन्हीं घटनाओं में से एक घटना वह है जो सही बुखारी में मौजूद है कि उर्वह बिन जुबैर ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजियल्लाहु अन्हु से मालूम किया कि मुश्रिकों ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सबसे सख्त क्या मामला किया? उन्होंने बतायाः ''नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे। इतने में उक़बा बिन अबू मुअीत ने आपकी गर्दन में अपना कपड़ा डाला और ज़ोर से खींचा। अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु उसकी तरफ़ बढ़े और उसका मूंढा पकड़ कर उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दूर किया और कहाः क्या तुम लोग एक आदमी को केवल इस वजह से क़त्ल करना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है।

एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे, अबू जहल और उसके साथी वहीं बैठे थे। उन्होंने एक दूसरे से कहाः कौन है जो फ़लां क़बीले के ऊंटों की ओझड़ियां लाकर मुहम्मद की पीठ पर डालेगा जब कि वह सज्दे में जाएगा? यह सुनकर क़ौम का सबसे बदबख्त खड़ा हुआ और ओझड़ी लाकर ताक में बैठ गया। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सज्दे में गए तो आप की पीठ पर दोनों कांधों के बीच में ओझड़ी डाल दी। यह देख कर सभी हंस पड़े और एक दूसरे पर गिरने लगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे ही की हालत में थे। आप ने अपना सर नहीं उठाया, यहां तक कि आपकी बेटी फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हाआयीं और उन्होंने आपकी पीठ से गन्दगी को हटाया।

इससे भी ज़्यादा कठोर वह मानसिक यातना थी जो अलग–अलग शक्लों में आपको दी गयी जैसे कभी आपकी दावत को ठुकराया गया और आपको झुठलाया गया, कभी आपको काहिन, कवि, मजनूं और जादूगर कहा और कभी आपकी पेश की गयी आयतों को पिछली क़ौमों के देव मालाई क़िस्से कहानियां क़रार दिया गया। इन्हीं में से अबू जहल का यह कथन भी था

जो उसने उपहास के तौर पर कहा थाः ''ऐ मेरे अल्लाह! यदि यह तेरे पास से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश उतार या हमें दुख दायी यातना का शिकार कर दे। आपका चचा अबू लहब आपके पीछे पीछे लगा रहता। और आप लोगों की इज्तिमागाहों या बाज़ारों में दावत के उद्देश्य से तशरीफ़ ले जाते तो वह आपको झुठलाया करता और लोगों को आपकी बात मानने से मना करता और उसकी पत्नी उम्मे जमील लकड़ियों और कांटों को जमा करती और उन्हें आपके रास्ते में फैला दिया करती। जब आपको शेअबे अबू तालिब में घेर दिया गया था तो उस समय की मुसीबत अपनी चरम सीमा को पहुंच गयी, मुसलमानों ने भूख की सख्ती से पेड़ के पत्ते तक खाए और आपके दुख में और इज़ाफ़ा उस समय हुआ जबकि आपने उस चचा को खो दिया जो आपकी हिफ़ाजत किया करते थे और आपकी ओर से बचाव किया करते थे और दुख व पीड़ा दोगुना उस समय हो गये जब वे कुफ्र की हालत पर मरे। फिर अचानक आपकी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाकी वफ़ात हो गयी जो कि आपको तसल्ली दिया करती थीं और आपकी हर प्रकार से मदद किया करती थीं। इसके बाद आप अपने क़त्ल की कई कोशिशों के बाद अपने वतन को छोड़ कर हिजरत के लिए निकल पड़े। मदीना में सब्र व धैर्य, बलिदान और कुरबानी का सख्त से सख्त ज़िन्दगी का नया दौर शुरु हुआ यहां तक कि आप भूखे रहे और गुरबत का जीवन गुजारा और अपने पेट पर पत्थर तक बांधा। आप बयान करते हैं कि ''मुझे अल्लाह की राह में इस शिद्दत से डराया गया कि इस जैसा किसी को नहीं डराया जा सकता। मुझे अल्लाह की राह में इतनी अधिकता से यातनाएं दी गयीं कि इतनी सख्त यातनाएं किसी को नहीं दी जा सकतीं। मुझ पर तीस दिन और रात ऐसे आए कि मेरे और बिलाल के पास कोई ऐसी चीज़ न थी जिसे ज़िन्दा इन्सान खाता है सिवाए उस थोड़े से सामान के जो बिलाल रजियल्लाहु अन्हु अपनी बग़ल में छुपाये रहते।

आपकी इज़्ज़त पर हमला किया गया। आपको कपटियों और जाहिल बद्दुओं से यातनाएं सहना पड़ीं। सही बुखारी में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि एक बार रसूले अकरम ने ग़नीमत का माल तक़सीम किया। एक अन्सारी ने कहाः ''मुहम्मद ने इस तक़सीम से अल्लाह की खुशनूदी नहीं चाही है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पहुंचा और आपको इस घटना की खबर दी तो आपका चेहरा तब्दील हो गया और आपने इस अवसर पर फ़रमायाः अल्लाह मूसा अलैहिस्सलाम पर रहम फ़रमाए उन्हें इससे भी अधिक यातनाएं दी गयीं तो उन्हों ने सब्र किया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन अवसरों पर सब्र व धैर्य का मुज़ाहिरा किया, उनमें आपके बच्चों और बेटियों की वफ़ात के दिन भी हैं, आपके सात बच्चे थे। एक के बाद एक उनकी मौतें हुईं यहां तक कि फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हाके अलावा कोई बाक़ी नहीं बचा। इससे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो कमज़ोर पड़े और न ही नर्म हुए बल्कि अत्यन्त ही बेहतर अन्दाज़ में सब्र का दामन पकड़े रहे। आपके बेटे इबराहीम रजि0 की जब वफ़ात हुई उस दिन आपकी ज़बान से ये कलिमात अदा हुएः ''आँखें भीगी हैं दिल दुखी है लेकिन इस अवसर पर हम वही कहेंगे जिसे हमारा पालनहार पसन्द करेगा, ऐ इबराहीम! हम तेरी जुदाई से दुखी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सब्र केवल यातनाओं और तकलीफ़ों तक ही सीमित नहीं था बल्कि आप अल्लाह के आज्ञा पालन की राह में भी सब्र का सबूत दिया करते थे क्यों कि अल्लाह ने इसका हुक्म दिया था। अतएव आप इबादत व फ़रमां बरदारी में बड़ी हद तक मेहनत किया करते थे यहां तक कि आपके पांव में लम्बे क़याम की वजह से सूजन आ जाती थी। इस बारे में जब आप से मालूम किया गया तो आपने फ़रमायाः ''क्या मैं शुक्र अदा करने वाला बन्दा न हो जाऊं।